डॉ० पंकज कुमार
अतिथि शिक्षक



'वर्णरत्नाकर काव्य नहि, काव्योपयोगी ग्रन्थ थिक', प्रमाणित करू।

कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर कृत 'वर्णरत्नाकरक' एकमात्र हस्तलेख उपलब्ध अछि जे बंगालक एसियाटिक सोसायटी, कलकत्ता मे हस्तलेख-संग्रह विभाग मे सुरक्षित राखल अछि। एहि मे 77 तालपत्र छल, किन्तु ओहि मे सँ किछु हराए गेल अछि। ई पोथी लक्ष्मण संवत् 388 मे आश्वीनवदि सप्तमीक रवि दिन लिखल गेल। संयोग सँ एकर अन्तिम पृष्ठ उपलब्ध अछि। एहि पोथीक हस्तलेख पण्डित हर प्रसाद शास्त्रीक शिष्य पण्डित विनोद बिहारी काव्यतीर्थ कें मिथिला सँ प्राप्त भेल छलन्हि।

ज्योतिरीश्वर कृत 'वर्णरत्नाकर' मैथिली साहित्यक प्रथम गद्य ग्रन्थ त' अछिए, सम्भावना इहो अछि जे समस्त भारतीय साहित्यक ई प्रथमे गद्य ग्रन्थ थिक। एकर रचनाकाल 14म शताब्दीक पूर्वार्द्ध अछि। एहि प्रसंग वर्णरत्नाकरक भूमिका मे श्री सुनीति कुमार चटर्जी लिखैत छथि—

"The 'Vernaratnakara' is the oldest work in the Maithili language of North Bihar so far Known, and it goes back to the 1st half, Perhaps to the 1st quarter, of the 14th Century."

वर्णरत्नाकरक शाब्दिक अर्थ होइत अछि- 'वर्णनक सागर' एवं वस्तुतः ई ग्रन्थ ताहि तथ्य कें सार्थक करैत अछि। एहि ग्रन्थक प्रसंग विभिन्न विद्वानक भिन्न-भिन्न मत अछि। वर्णरत्नाकरक प्रथम सम्पादक डा० सुनीति कुमार चटर्जीक अनुसार ई लौकिक ओ संस्कृत शब्दक एकटा कोष थिक जाहि मे विभिन्न वस्तु ओ भावक उपमा संग्रहित अछि। सुनीति बाबू स्पष्ट कहैत छथि:—

"The subject matter of the book is very curious. It gives the poetic conventions."

डा० जयकान्त मिश्र एकरा

"Vernana of Course does not mean discription."

डा० जयकान्त मिश्र एकरा 'The ocean of vernanas or discription' कहने छथि। मेदनी कोष मे वर्ण शब्दक अर्थ 'गुणकथन' [Narration of qualities] कएल गेल अछि—

"वर्णोद्विभादिशुक्लादियशोगुणकथा सुचः ॥"

जे किछु हो, किन्तु वर्णरत्नाकर कें शब्द-कोष कहब उचित प्रतीत नहि होइत अछि। एकर साहित्यिक महत्व अछि। एहि मे भिन्न-भिन्न प्रकारक विषय-वस्तुक विन्यासपूर्ण ढंग सँ वर्णन कएल गेल अछि। वस्तुतः कविशेखराचार्य जीक उद्देश्य छलन्हि जे सभ वस्तु आदि कें एकठाम समेटि कए एकरा दृष्टांतक

Scanned with CamScanner

रूपमे सारख्व, जाहि सँ भविष्य मे रचनाकार लोकनि कें सुविधा होइन्ह। तें एहि सभ आधार पर वर्णरत्नाकर कें 'काव्य-नहि, काव्योपि ग्रन्थ' कहल गेल अछि। एहि ग्रन्थ मे मात्र वर्णन करल गेल अछि, रचनाकारक अपेक्षा व्याख्या सँ नहि अछि। उदाहरणार्थ वसन्त-वर्णन द्रष्टव्य थिक:—

"वृक्षक नूतनता, पल्लवक उद्गम, कुमुदक सम्भार, मलयानिलक वेग, कोकिलाक कलरव, भ्रमरक झंकार, कन्दर्पक प्रभाव, विरहिणीक उत्कंठा, नायकक हरष, नायिकाक अभिलाष, दिनकरक रम्यता, शिशिरक अपगम, मधुकरक समृद्धि, पुष्पक सौरभ, पवनक आकांक्षा एवम् विधगुणविशिष्ट वसन्त देषु।"

एहि ग्रन्थक नाम 'रत्नाकर' अछि तें एकर अध्यायकें 'कल्लोल' संज्ञा सँ अभिहीत करलन्हि अछि। प्रत्येक कल्लोलक अन्त मे ओकर नाम देल गेल अछि। प्रथम कल्लोल नगर-वर्णन सँ आरम्भ होइत अछि, किन्तु दुर्भाग्य सँ एकर किछु पत्र लुप्त अछि। एकर अन्तमे नगरक कात-करौट मे बसनिहार विभिन्न जातिक वर्णन अछि। दोसर कल्लोल मे नायक, नायिका, सखी, हास्य आदिक वर्णन अछि। तेसर कल्लोल मे स्नान, पूजा, शयन, प्रभात, संध्या, मध्याह्न, वर्षा-रात्री, अन्धकार, चन्द्रमा, मेघ आदिक वर्णन अछि। चारिम कल्लोल मे छओ ऋतु क्रमशः वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर एवं चतुष्ठकला, सोलह महादान, रत्न, मणि, वस्त्र, अभिषेक, ज्योतिर्विद, वेश्या, कुट्टनी, कामावस्था आदिक वर्णन अछि। पाँचम कल्लोल मे प्रयाणक, आखेटक, उपवन, सरोवर, पर्वत आदिक वर्णन अछि। छठम कल्लोल मे मल्लादि, मल्लयुद्ध, नृत्य, पात्र-नृत्य, वीणा आदिक वर्णन अछि। सातम कल्लोल मे श्मशान, मरुस्थल, समुद्र, तीर्थ, नदी, पर्वत, चौरासी सिद्ध, अष्टदिग्गज, रामायण, अष्टादश पुराण, पतिव्रता आदिक वर्णन अछि। आठमकल्लोल मे राजपुत्रकुल, छत्तीस दण्डायुद्ध, राज्य-वर्णन, विवाह, द्वादशपुत्र, वणिकपुत्र, चौर, दुर्ग, नौका, वैद्य एवं पुनर्भोजन वर्णन अछि।

एहि पोथी मे मिथिलाक तत्कालीन राजनैतिक स्थितिक वर्णन करैत ज्योतिरीश्वर ठाकुर राजाक दिनचर्या एवं अभिषेक आदिक उल्लेख करैने छथि, जाहि सँ तत्कालीन मिथिलाक राजनैतिक स्थितिक स्पष्ट चित्र भेटैत अछि। तदनुसार राजदरबार, राजकुमार, मंत्री, पण्डित, राजगुरु, सामन्त, सेनापति आदि अनेक श्रेष्ठजनक वर्णन सँ सिद्ध होइत अछि जे ओहि समय राज्य मे शान्तिक वातावरण छल।

पुनः आर्थिक अवस्थाक वर्णन करैत दरबार में विलासिताक ताण्डव-नृत्य ओ बाजार मध्य कोलाहलक चित्रण सँ तत्कालीन आर्थिक अवस्थाक सुन्दर वर्णन करलन्हि अछि।

प्रायः समस्त भारतीय साहित्य मे वर्णरत्नाकर सदृश्य आन कोनो ग्रन्थ नहि अछि जकर माध्यम सँ ओहि समाजक अवस्थाक

Scanned with CamScanner

परिचय भेटय। एहि ग्रन्थक सहायता सँ कवि, कथाकार लोकनि कें ओहि समयक चित्रण करबा मे पूर्ण सहायता भेटैत छन्हि। तें एकरा काव्योपयोगी ग्रन्थ कहब अत्यंत समीचीन अछि।

वर्णरत्नाकरक अध्ययन सँ तत्कालीन मिथिलाक नगर, नायिका, नायक, सखी, वेश्या, कूट्टनी आदिक वर्णन स्पष्ट दृष्टिगोचर होइत अछि। नायकक वर्णन मे कवि नायकक विविध गुणक उल्लेख करैत कहैत छथि जे नायक कें सुन्दर, सुशील, शास्त्रज्ञ, दानशील ओ दयालुक संग धनुर्वेद, अश्वशिक्षा, गजशिक्षा, गायन आदि मे निपुण रहब आवश्यक अछि। नायिका-वर्णन मे नायिकाक सौन्दर्य-चित्रण करैत कहैत छथि :—

"उज्वल, कोमल, लोहित, सम, सुतल, सालंकार, पंचगुण संपूर्ण चरण, अकठिन, सुकुमार, गजहस्तप्राय जानुयुगल, पीन, मांसल, कूर्मपृष्ठाकार श्रोणी, गम्भीर दक्षिणावर्त मण्डलाकृति, नाभि क्षीण ......।"

एतबे नहि, सखीक वर्णन करैत कहैत छथि :—

"पूर्णिमाक चान्द अमृत पूरल अइसन मुह, श्वेत पंकजक दल भ्रमर बइसल अइसन आँखि, कामरूक कल्लोल अइसन भउंह, मथले फूले नर्मदाक शलाका पूरल अइसन खोम्पा, परवाक पल्लव अइसन अधर....।"

वर्णरत्नाकर अपन साहित्यिक अभिव्यंजनाक कारणें कनहु नीरस प्रतीत नहि होइत अछि। साहित्यिक एहि मे रस एवं गुणवर्णनक पूर्ण रूपें समावेश कएल गेल अछि। एहि मे प्रयुक्त उपमा आदि सँ प्रतीत होइत अछि जे वर्णरत्नाकरक रचना मे ज्योतिरीश्वर कठिन अनुसंधान कएने होथि। उदाहरणस्वरूप ई उद्धरण देखू :—

"पाताल अइसन दुःप्रवेश, स्त्रीक चरित्र अइसन दुर्लक्ष्य, कालिन्दीक कल्लोल अइसन मांसल, कामरूक पर्वत अइसन मांसल निविल, पापक सहोदर अइसन शरीर, आतंकक नगर अइसन भयानक.....अंधकार देखु।"

वर्णरत्नाकरक प्रभाव बंगालक कत्थक नृत्य पर स्पष्ट दृष्टिगोचर होइत अछि। डा० सुनीति कुमार चटर्जी सेहो बंगालक कत्थक नृत्य पर एकर प्रभाव स्वीकार कएलन्हि अछि। एतबे नहि, परिवर्ती कवि लोकनि पर वर्णरत्नाकरक स्पष्ट प्रभाव देखल जाइत अछि। महाकवि विद्यापति पर्यन्त ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर सँ पूर्ण रूपें प्रभावित छथि। उदाहरणक हेतु वर्णरत्नाकरक वेश्या-वर्णन द्रष्टव्य थिक, जकर प्रयोग विद्यापति 'कीर्तिलता' मे वेश्या-वर्णन मे कएलन्हि अछि :—

"कित्तिम लज्जा, कपट तारुण्य, धन निमित्ते प्रसेम, लोभे विनय, सौभाग्ये कारणें, बिनु स्वामी सिन्दूर परा परिचय अपमान।"

उपरोक्त उदाहरण सँ स्पष्ट अछि अछि जे महाकवि पर वर्णरत्नाकरक प्रभावे टा नहि, प्रत्युत् ई उक्त उद्धरणक अन्त मे 'पर परिचय अपावन' जोड़ि वर्णरत्नाकरक उद्धरण कें ओहि प्रकारें राखि देलन्हि अछि। एतबे नहि, विद्यापतिक पदावली पर सेहो वर्णरत्नाकरक अन्यतम प्रभाव अछि :—

" कबरी-भय चामरि गिरि-कन्दर
मुख-भय चाँद अकासे ।
हरिणीनयन-भय स्वर-भय कोकिल
गति-भय गज बनवासे ।।"

[ विद्यापति पदावली ]

" याक मुखक शोभा देखि पद्मँ जलप्रवेश करल
आँखिक शोभा देखि हरिणवण गेल
केशक शोभा देखि चमरी पलायन करल..... ।"

[ वर्णरत्नाकर ]

वर्णरत्नाकर साहित्यिक, ऐतिहासिक, भाषा-वैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय आदि सभ दृष्टिकोण सँ अपन महत्वपूर्ण स्थान रखैत अछि। 14वीं शताब्दी सँ पूर्वक कोनो एहन पोथी नहि प्राप्त होइत अछि जे वर्णरत्नाकर सदृश्य तत्कालीन समाजक सभ्यता-संस्कृति, आहार-व्यवहार, रहन-सहन आदिके एतेक सुन्दर चित्र प्रस्तुत कए सकए। तेँ निर्विवाद रूप सँ एहि पोथी कें 'काव्य नहि, काव्योपयोगी ग्रन्थ' कहबा मे कोनो अत्युक्ति नहि होयत। डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी एकरा 'मानोल्लास' नामक पूर्ववर्ती संस्कृत ग्रन्थ एवं 'आइने अकबरी'क कोटि मे रखैत छथि। डा० सुनीति कुमार चटर्जी सेहो एहि ग्रन्थक महत्व कें लक्ष्य करैत स्पष्ट रूप सँ कहलन्हि अछि :—

"It is a compendium of life and culture of medieval India in general and of Maithili in perticular. The atmosphare is uninfluenced by the coming in the Turks, it is purely Hindus."

भाषा शास्त्रीय दृष्टिकोण सँ एहि ग्रन्थक सेहो अत्यंत महत्त्व अछि। एहि मे किछु शब्दक प्रयोग एहेन भेल अछि जकर निर्माणक आधार ओकर व्यवसाय पर भेल अछि। तकरे परिष्कृत रूपक प्रयोग विद्यापति करलन्हि। एहि सँ सिद्ध होइत अछि जे विद्यापतिक युग भाषा-परिवर्त्तनक संक्रमण-काल छल। जेना, पठन-पाठन इत्यादिक व्यवसाय सूचक शब्द सँ 'पाठक' बनि गेल। एहने बहुत ~~शब्द भेटैत अछि~~ व्यवसाय सूचक, कुल सूचक वा 'कुलनाम' शब्द भेटैत अछि, जकरा विद्यापति अक्षुण्ण रखबाक प्रयास करलन्हि अछि।

Scanned with CamScanner

एवं प्रकारें, उपरोक्त तथ्य सभक अध्ययन सँ स्पष्टरूपेण कहल जा' सकैत अछि जे वर्णरत्नाकर 'काव्य ता नहि, काव्योपयोगी ग्रन्थक रूप मे अपन पूर्ण प्रामाणिकता सिद्ध करैत अछि। एकमात्र एहि पोथीक आधार पर कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर एकहि संग समाजशास्त्री, भाषा-वैज्ञानिक, इतिहासज्ञ एवं नीतिज्ञक रूप मे अमर छथि। उपमाक सुषमा एवं अनुप्रासक छटा सँ ई वर्णरत्नाकर कें झंकृत कर देने छथि तथा भाषाक समृद्धि मे ज्ञान, विद्या ओ साधनाक त्रिवेणी ततेक प्रखर रूप मे प्रवाहित कएलन्हि अछि जाहि मे शताब्दी सँ पाठकलोकनि प्रवाहित होइत रहल अछि।

वस्तुतः वर्णरत्नाकर 'काव्य नहि, काव्योपयोगी ग्रन्थ' थीक।

—※—